IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 3, July 2026
Impact Factor: 8.2

# रामायण और महाभारत में कैकेयी एवं उत्तरा का तुलनात्मक अध्ययन

**आलोक भारद्वाज**
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांदा
Alokbhardwaj106@gmail.com

**सारांश (Abstract)**

भारतीय साहित्य की महाकाव्य परंपरा में रामायण और महाभारत का सर्वोच्च स्थान है। ये दोनों ग्रंथ केवल धार्मिक या पौराणिक आख्यान नहीं हैं, बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति, दर्शन, राजनीति और नैतिक मूल्यों के जीवंत दस्तावेज़ हैं। इन महाकाव्यों में वर्णित स्त्री-पात्रों ने कथा के विकास के साथ-साथ भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक चिंतन को भी गहराई से प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में रामायण की कैकेयी तथा महाभारत की उत्तरा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

कैकेयी का चरित्र सामान्यतः राम के वनवास की घटना के कारण नकारात्मक रूप में देखा जाता है, जबकि वाल्मीकि रामायण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वे साहसी, विवेकशील, राजनीतिक दृष्टि से जागरूक तथा युद्ध-कौशल में दक्ष रानी थीं। दूसरी ओर महाभारत की उत्तरा एक ऐसी नारी हैं जो युद्ध की विभीषिका के बीच धैर्य, मातृत्व और वंश-परंपरा की निरंतरता का प्रतीक बनकर उभरती हैं। अभिमन्यु की मृत्यु के पश्चात परीक्षित को जन्म देकर वे कुरुवंश की रक्षा करती हैं।

इस शोध का उद्देश्य इन दोनों पात्रों के व्यक्तित्व, मातृत्व, कर्तव्यबोध, राजनीतिक चेतना तथा सांस्कृतिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन करना है। आधुनिक नारीवादी दृष्टिकोण के आलोक में यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि भारतीय महाकाव्यों में स्त्री केवल पारिवारिक भूमिका तक सीमित नहीं है, बल्कि वह इतिहास, संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय निर्माता है।

प्रमुख शब्द: रामायण, महाभारत, कैकेयी, उत्तरा, तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय नारी, मातृत्व, राजधर्म, नारी विमर्श, सांस्कृतिक अध्ययन।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 3, July 2026
Impact Factor: 8.2

1. भूमिका

भारतीय संस्कृति की आधारशिला जिन ग्रंथों पर निर्मित हुई है, उनमें रामायण और महाभारत का स्थान सर्वोपरि है। ये दोनों महाकाव्य केवल धार्मिक आख्यान नहीं हैं, बल्कि भारतीय समाज के नैतिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और दार्शनिक जीवन के दर्पण हैं। इनके पात्र भारतीय जनमानस में आदर्श, प्रेरणा और जीवन-दर्शन के प्रतीक बन गए हैं। इन महाकाव्यों की विशेषता यह है कि इनमें मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष—धर्म, कर्तव्य, परिवार, राज्य, न्याय, प्रेम, त्याग और संघर्ष—का समन्वित चित्रण मिलता है।

भारतीय महाकाव्यों में स्त्री की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यदि रामायण से सीता, कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी को अलग कर दिया जाए, तो कथा की मूल संरचना ही बदल जाएगी। इसी प्रकार महाभारत से सत्यवती, कुंती, द्रौपदी, गांधारी, सुभद्रा और उत्तरा को अलग कर दिया जाए तो उसका ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्वरूप अधूरा रह जाएगा। इससे स्पष्ट है कि महाकाव्यों में स्त्री केवल सहायक पात्र नहीं, बल्कि घटनाओं की दिशा निर्धारित करने वाली प्रमुख शक्ति है।

रामायण की कैकेयी का चरित्र भारतीय साहित्य में सबसे अधिक विवादास्पद पात्रों में से एक माना जाता है। लोकमानस में उन्हें प्रायः राम के वनवास का कारण मानकर दोषी ठहराया गया है। किंतु जब वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, आनंद रामायण तथा रामचरितमानस का गहन अध्ययन किया जाता है, तो स्पष्ट होता है कि कैकेयी का व्यक्तित्व अत्यंत जटिल और बहुआयामी है। वे केवल महत्वाकांक्षी रानी नहीं, बल्कि युद्धकला में दक्ष, राजकीय नीति से परिचित, दूरदर्शी तथा मातृत्व की भावना से प्रेरित स्त्री हैं। उनका निर्णय भले ही विवादास्पद रहा हो, परन्तु उसी निर्णय ने रामकथा को वह दिशा प्रदान की जिसके परिणामस्वरूप रावण-वध, धर्म की स्थापना और रामराज्य की कल्पना साकार हुई।

महाभारत की उत्तरा का चरित्र अपेक्षाकृत कम चर्चित है, परन्तु उसका ऐतिहासिक महत्व अत्यंत गहरा है। वे विराट की पुत्री, अभिमन्यु की पत्नी और परीक्षित की माता हैं। कुरुक्षेत्र युद्ध में अभिमन्यु की मृत्यु के पश्चात जब सम्पूर्ण कुरुवंश विनाश के कगार पर पहुँच जाता है, तब उत्तरा के गर्भस्थ पुत्र परीक्षित के माध्यम से ही वंश की निरंतरता बनी रहती है। इस प्रकार उत्तरा केवल एक शोकग्रस्त विधवा नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक उत्तराधिकार की वाहक हैं। उनका धैर्य, संयम और मातृत्व युद्धोत्तर समाज में पुनर्निर्माण की प्रक्रिया का आधार बनता है।

इन दोनों पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि दोनों की भूमिकाएँ भिन्न होते हुए भी इतिहास-निर्माण में निर्णायक हैं। कैकेयी परिवर्तन की प्रेरक हैं, जबकि उत्तरा परिवर्तन के पश्चात पुनर्निर्माण की आधारशिला हैं। एक राजनीतिक निर्णय का प्रतीक है तो दूसरी सांस्कृतिक निरंतरता की संरक्षिका।

आधुनिक समय में जब नारी-विमर्श, सांस्कृतिक अध्ययन तथा स्त्री-अस्मिता पर गंभीर चिंतन हो रहा है, तब इन पात्रों का पुनर्पाठ अत्यंत आवश्यक हो जाता है। आज यह प्रश्न उठाया जा रहा है कि क्या कैकेयी को केवल नकारात्मक पात्र के रूप में देखना उचित है? क्या उत्तरा का मौन केवल दुर्बलता का प्रतीक है या वह धैर्य और जीवन-संरक्षण की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है? प्रस्तुत शोध इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है।

## 2. शोध की आवश्यकता (Need of the Study)

भारतीय महाकाव्यों के स्त्री-पात्रों का मूल्यांकन लंबे समय तक धार्मिक और नैतिक दृष्टि से किया जाता रहा है। परिणामस्वरूप अनेक पात्रों के व्यक्तित्व के गहरे आयाम उपेक्षित रह गए। कैकेयी इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। लोककथाओं और धार्मिक प्रवचनों में उन्हें प्रायः राम के वनवास की दोषी के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि उनके साहस, राजनीतिक विवेक और राज्य-व्यवस्था की समझ पर अपेक्षाकृत कम चर्चा हुई।

इसी प्रकार उत्तरा का उल्लेख प्रायः अभिमन्यु की पत्नी और परीक्षित की माता के रूप में सीमित कर दिया जाता है। जबकि यदि महाभारत के व्यापक संदर्भ में देखा जाए, तो वे युद्धोत्तर भारत की आशा, धैर्य और सांस्कृतिक पुनर्सृजन का प्रतीक हैं। उनका मातृत्व केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि ऐतिहासिक और राजवंशीय महत्व रखता है।

आज के सामाजिक संदर्भ में, जहाँ स्त्री की भूमिका को नए दृष्टिकोण से समझा जा रहा है, कैकेयी और उत्तरा जैसे पात्रों का पुनर्पाठ अत्यंत आवश्यक है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि भारतीय महाकाव्यों की स्त्रियाँ केवल भावनात्मक पात्र नहीं, बल्कि राजनीतिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं की सक्रिय भागीदार हैं।

## 3. शोध के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. रामायण में कैकेयी के चरित्र का समग्र अध्ययन करना।
2. महाभारत में उत्तरा के व्यक्तित्व एवं सांस्कृतिक भूमिका का विश्लेषण करना।
3. दोनों पात्रों के मातृत्व, कर्तव्यबोध एवं उत्तरदायित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. भारतीय संस्कृति में स्त्री की भूमिका को इन पात्रों के माध्यम से समझना।

5. आधुनिक नारीवादी दृष्टिकोण से दोनों पात्रों का पुनर्मूल्यांकन करना।

6. यह स्पष्ट करना कि दोनों पात्र अपने-अपने महाकाव्यों में इतिहास-निर्माण की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

## 4. शोध प्रश्न

इस अध्ययन के प्रमुख शोध प्रश्न हैं—

- क्या कैकेयी का निर्णय केवल व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा का परिणाम था?
- क्या उत्तरा का चरित्र केवल मातृत्व तक सीमित है?
- दोनों पात्रों में मातृत्व की अवधारणा किस प्रकार भिन्न है?
- भारतीय महाकाव्यों में स्त्री की वास्तविक भूमिका क्या है?
- आधुनिक नारीवादी दृष्टिकोण से कैकेयी एवं उत्तरा के पुनर्पाठ का क्या महत्व है?

## 5. शोध पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन मुख्यतः तुलनात्मक (Comparative) तथा गुणात्मक (Qualitative) शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए प्राथमिक स्रोतों के रूप में वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस, महाभारत, अध्यात्म रामायण तथा आनंद रामायण का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में प्रतिष्ठित विद्वानों के आलोचनात्मक ग्रंथ, शोध-पत्र तथा नारीवादी अध्ययन सम्मिलित किए गए हैं।

विश्लेषण में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक तथा नारीवादी आलोचना-पद्धतियों का समन्वित उपयोग किया गया है, जिससे दोनों पात्रों का बहुआयामी अध्ययन प्रस्तुत किया जा सके।

## 6. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

रामायण और महाभारत पर व्यापक शोध उपलब्ध है, किन्तु कैकेयी और उत्तरा का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। इरावती कर्वे की युगांत महाभारत के पात्रों का आधुनिक दृष्टि से पुनर्पाठ प्रस्तुत करती है। ए. के. रामानुजन ने Three Hundred Ramayanas में रामकथा की विविध परंपराओं का विश्लेषण किया है। हज़ारी

प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह तथा विश्वनाथ त्रिपाठी जैसे विद्वानों ने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और महाकाव्यों के साहित्यिक महत्त्व पर प्रकाश डाला है।

फिर भी कैकेयी और उत्तरा के चरित्र का एक समन्वित, तुलनात्मक तथा नारीवादी दृष्टिकोण से अध्ययन अपेक्षाकृत अल्प है। यही इस शोध का प्रमुख शोध-अंतराल (Research Gap) है।

## 7. रामायण में कैकेयी का चरित्र : व्यक्तित्व, मातृत्व, राजनीतिक चेतना एवं सांस्कृतिक योगदान

### 7.1 कैकेयी का परिचय

रामायण के प्रमुख स्त्री-पात्रों में कैकेयी का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। वे कैकय देश के राजा अश्वपति की पुत्री तथा अयोध्या के महाराज दशरथ की प्रिय रानी थीं। यद्यपि लोकमानस में कैकेयी का नाम राम के वनवास के कारण प्रायः नकारात्मक रूप में लिया जाता है, परंतु वाल्मीकि रामायण के गहन अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनका व्यक्तित्व अत्यंत बहुआयामी, प्रभावशाली और जटिल है।

कैकेयी केवल राजमहल की रानी नहीं थीं, बल्कि युद्ध-कौशल, रथ संचालन, राजनीति, राजधर्म तथा निर्णय क्षमता में दक्ष थीं। वे अपने समय की शिक्षित, साहसी और आत्मविश्वासी स्त्री थीं। यही कारण है कि दशरथ उन्हें अत्यंत सम्मान और स्नेह देते थे।

कैकेयी के चरित्र का महत्व इस तथ्य में निहित है कि उनके एक निर्णय ने केवल अयोध्या के राजपरिवार को ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण रामकथा की दिशा बदल दी। यदि कैकेयी राम के वनवास का आग्रह न करतीं, तो राम का वनगमन, ऋषियों की रक्षा, सीता-हरण, रावण-वध तथा रामराज्य की स्थापना जैसी घटनाएँ उसी रूप में घटित नहीं होतीं। अतः कैकेयी को केवल राम के वनवास का कारण मानना उनके चरित्र का अत्यधिक सरलीकरण होगा।

### 7.2 कैकेयी का जन्म, वंश एवं प्रारंभिक जीवन

कैकेयी कैकय (कैकेय) राज्य के राजा अश्वपति की पुत्री थीं। कैकय राज्य उस समय उत्तर-पश्चिम भारत का एक समृद्ध और शक्तिशाली राज्य माना जाता था। राजपरिवार में जन्म लेने के कारण उन्हें राजनीति, प्रशासन, युद्ध-कला, कूटनीति तथा राजधर्म की शिक्षा प्राप्त हुई।

वाल्मीकि रामायण में संकेत मिलता है कि कैकेयी बचपन से ही साहसी, तेजस्वी और आत्मविश्वासी थीं। उनका व्यक्तित्व केवल सौंदर्य तक सीमित नहीं था, बल्कि उनमें नेतृत्व की क्षमता भी विद्यमान थी। यह तथ्य उस समय

की सामाजिक संरचना को भी दर्शाता है, जहाँ राजपरिवार की स्त्रियों को आवश्यकतानुसार राज्य-व्यवस्था एवं युद्धकला का प्रशिक्षण दिया जाता था।

कैकेयी का विवाह अयोध्या के राजा दशरथ से हुआ। दशरथ की तीन रानियों—कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा—में कैकेयी विशेष प्रिय थीं। इसका कारण केवल उनका सौंदर्य नहीं, बल्कि उनकी बुद्धिमत्ता, साहस और सहयोगी स्वभाव भी था।

### 7.3 कैकेयी का व्यक्तित्व

कैकेयी का व्यक्तित्व बहुआयामी है। उन्हें निम्नलिखित विशेषताओं के आधार पर समझा जा सकता है—

(क) साहस

कैकेयी अत्यंत साहसी थीं। वे युद्धभूमि में भी राजा दशरथ के साथ जाती थीं। प्राचीन भारतीय समाज में यह विशेष सम्मान की बात थी कि कोई रानी युद्ध में राजा की सहायक बने।

(ख) बुद्धिमत्ता

राजदरबार की राजनीति, उत्तराधिकार और प्रशासन संबंधी विषयों में उनकी गहरी समझ थी। वे केवल भावनाओं के आधार पर निर्णय लेने वाली स्त्री नहीं थीं।

(ग) आत्मविश्वास

कैकेयी अपने अधिकारों और दायित्वों के प्रति सजग थीं। उन्होंने दशरथ से पूर्व प्रदत्त दो वरदानों की स्मृति दिलाकर यह सिद्ध किया कि वे अपने अधिकारों का प्रयोग करना जानती थीं।

(घ) मातृत्व

उनका सम्पूर्ण निर्णय भरत के भविष्य की चिंता से प्रेरित था। यद्यपि उनके निर्णय की आलोचना की जाती है, फिर भी उसमें मातृत्व का तत्व स्पष्ट रूप से विद्यमान है।

### 7.4 युद्ध-कौशल और वीरांगना स्वरूप

वाल्मीकि रामायण के अनुसार एक अवसर पर देवासुर संग्राम में राजा दशरथ युद्ध करते हुए घायल हो गए। उस समय कैकेयी ने अत्यंत साहस और बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए रथ को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया और राजा का जीवन बचाया। इस घटना से प्रसन्न होकर दशरथ ने उन्हें दो वरदान देने का वचन दिया।

यह प्रसंग अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे स्पष्ट होता है कि कैकेयी केवल महल तक सीमित रहने वाली रानी नहीं थीं, बल्कि युद्धनीति, रथ संचालन और संकट प्रबंधन में भी दक्ष थीं। उनके इस साहस ने उन्हें राजपरिवार में विशेष सम्मान दिलाया।

इस प्रसंग के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कैकेयी भारतीय महाकाव्यों की उन स्त्रियों में हैं जो आवश्यकता पड़ने पर युद्धभूमि में भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार उनका व्यक्तित्व पारंपरिक स्त्री-छवि से कहीं अधिक व्यापक है।

### 7.5 कैकेयी का मातृत्व

भारतीय साहित्य में मातृत्व को सर्वोच्च मूल्य माना गया है। कैकेयी का मातृत्व उनके चरित्र का सबसे जटिल पक्ष है। उन्होंने भरत के भविष्य को सुरक्षित करने के उद्देश्य से दो वरदान माँगे। उनके दृष्टिकोण से यह एक माँ का अपने पुत्र के अधिकारों की रक्षा करने का प्रयास था।

यद्यपि उनका निर्णय सामाजिक दृष्टि से विवादास्पद सिद्ध हुआ, किंतु इसे केवल स्वार्थ या ईर्ष्या के रूप में देखना उचित नहीं होगा। आधुनिक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह मातृत्व, उत्तराधिकार की चिंता और राजनीतिक असुरक्षा की संयुक्त अभिव्यक्ति थी।

भरत स्वयं अपनी माता के निर्णय से सहमत नहीं थे। उन्होंने राज्य स्वीकार करने से इनकार कर दिया और राम को ही अयोध्या का वास्तविक राजा माना। यह प्रसंग यह भी दर्शाता है कि कैकेयी का उद्देश्य व्यक्तिगत सत्ता प्राप्त करना नहीं था, बल्कि वे भरत के हित को सर्वोपरि मान रही थीं।

### 7.6 मंथरा का प्रभाव

कैकेयी के चरित्र को समझने में मंथरा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। मंथरा राजमहल की दासी थी, जिसने राम के राज्याभिषेक की सूचना मिलने पर कैकेयी को यह विश्वास दिलाया कि यदि राम राजा बनेंगे तो भरत का भविष्य संकट में पड़ जाएगा।

मंथरा ने कैकेयी के मन में भय, असुरक्षा और शंका उत्पन्न की। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो यह "सुझाव का प्रभाव" (Suggestion Effect) था। पहले से स्नेहपूर्ण और संतुलित विचार रखने वाली कैकेयी धीरे-धीरे परिस्थितियों को संदेह की दृष्टि से देखने लगीं।

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि यदि कैकेयी इतनी बुद्धिमान थीं तो वे मंथरा के प्रभाव में क्यों आईं? इसका उत्तर यह है कि कोई भी व्यक्ति भावनात्मक परिस्थितियों में तर्कसंगत निर्णय लेने में कठिनाई अनुभव कर सकता है। मातृत्व और उत्तराधिकार की चिंता ने उनके विवेक को प्रभावित किया।

### 7.7 दो वरदानों का प्रसंग

राजा दशरथ ने पूर्व में कैकेयी को दो वरदान देने का वचन दिया था। राम के राज्याभिषेक की घोषणा के बाद कैकेयी ने वही दो वरदान माँगे—

1. भरत का राज्याभिषेक।
2. राम का चौदह वर्ष का वनवास।

इन वरदानों ने रामायण की कथा को नया मोड़ दिया। सामान्यतः इस प्रसंग को कैकेयी के दोष के रूप में देखा जाता है, किंतु दार्शनिक दृष्टि से यही घटना धर्म की स्थापना का माध्यम भी बनती है। राम वन जाते हैं, ऋषियों की रक्षा करते हैं, रावण का वध करते हैं और अंततः आदर्श शासन की स्थापना करते हैं।

अर्थात् कैकेयी का निर्णय व्यक्तिगत स्तर पर दुखद होते हुए भी व्यापक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में धर्मस्थापना की प्रक्रिया का आरंभ करता है।

### 7.8 कैकेयी की राजनीतिक चेतना

कैकेयी का चरित्र इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि वे राजसत्ता और उत्तराधिकार के प्रश्नों को समझती थीं। प्राचीन राजतंत्र में उत्तराधिकार केवल पारिवारिक विषय नहीं था, बल्कि राज्य की स्थिरता से जुड़ा प्रश्न था।

उन्होंने दशरथ को उनके वचन की याद दिलाई। यह राजधर्म और वचनपालन की परंपरा के अनुरूप था। आधुनिक राजनीतिक विश्लेषण के अनुसार कैकेयी सत्ता-संतुलन, उत्तराधिकार और राजकीय अधिकारों के प्रश्न पर सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

इस दृष्टि से वे भारतीय महाकाव्यों की सबसे राजनीतिक रूप से जागरूक स्त्रियों में से एक हैं।

### 7.9 मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

कैकेयी का चरित्र मनोविज्ञान की दृष्टि से अत्यंत रोचक है।

उनके व्यक्तित्व में तीन प्रमुख मनोवैज्ञानिक तत्व दिखाई देते हैं—

- मातृत्व की तीव्र भावना
- भविष्य की असुरक्षा
- निर्णय लेने का साहस

उनका निर्णय ईर्ष्या से अधिक भय और असुरक्षा की प्रतिक्रिया था। मंथरा ने इस भय को बढ़ाया और परिणामस्वरूप कैकेयी ने ऐसा निर्णय लिया, जिसका प्रभाव सम्पूर्ण राज्य पर पड़ा।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक आलोचना के अनुसार कैकेयी का चरित्र मानवीय कमजोरियों और नैतिक जटिलताओं का प्रतिनिधित्व करता है। वे न पूर्णतः आदर्श हैं और न पूर्णतः दोषपूर्ण। यही उन्हें एक यथार्थवादी पात्र बनाता है।

### 7.10 आधुनिक नारीवादी दृष्टिकोण

समकालीन नारीवादी अध्ययन कैकेयी के चरित्र का पुनर्मूल्यांकन करता है। नारीवादी आलोचकों का मत है कि इतिहास और परंपरा ने कैकेयी के व्यक्तित्व को एकांगी रूप में प्रस्तुत किया। उन्हें केवल "राम के वनवास की दोषी" कह देना उनके राजनीतिक, बौद्धिक और मानवीय व्यक्तित्व की उपेक्षा है।

कैकेयी अपने अधिकारों का प्रयोग करती हैं, निर्णय लेती हैं और राजसत्ता के प्रश्नों पर हस्तक्षेप करती हैं। यह उन्हें भारतीय महाकाव्यों की सक्रिय स्त्री के रूप में स्थापित करता है। इसलिए आधुनिक अध्ययन उन्हें केवल नकारात्मक पात्र नहीं, बल्कि एक जटिल, संवेदनशील और ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण स्त्री के रूप में देखता है।

### 7.11 निष्कर्ष

कैकेयी का चरित्र भारतीय साहित्य के सबसे जटिल और बहुआयामी स्त्री-पात्रों में से एक है। वे वीरता, मातृत्व, राजनीतिक चेतना, निर्णय क्षमता और मानवीय दुर्बलताओं का अद्वितीय समन्वय प्रस्तुत करती हैं। उनके निर्णय ने रामायण की कथा को नई दिशा दी और भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में धर्म, त्याग तथा मर्यादा के आदर्शों को स्थापित करने की भूमिका निभाई। इसलिए कैकेयी का मूल्यांकन केवल एक नकारात्मक पात्र के रूप में नहीं, बल्कि इतिहास-निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाने वाली स्त्री के रूप में किया जाना चाहिए।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 3, July 2026
Impact Factor: 8.2

## 8. महाभारत में उत्तरा का चरित्र : व्यक्तित्व, मातृत्व, युद्धोत्तर पुनर्निर्माण एवं सांस्कृतिक योगदान

### 8.1 भूमिका

महाभारत केवल एक युद्ध का आख्यान नहीं है, बल्कि मानव जीवन की जटिलताओं, नैतिक द्वंद्वों, सत्ता-संघर्षों तथा सांस्कृतिक मूल्यों का विश्वकोश है। इस महाकाव्य में अनेक ऐसे स्त्री-पात्र हैं जिन्होंने कथा की दिशा को प्रभावित किया है। सत्यवती, कुंती, गांधारी और द्रौपदी जैसे पात्रों पर व्यापक चर्चा होती रही है, किंतु उत्तरा का चरित्र अपेक्षाकृत कम चर्चित होने के बावजूद अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

उत्तरा विराट नगर के राजा विराट की पुत्री, अभिमन्यु की पत्नी तथा परीक्षित की माता हैं। उनका जीवन महाभारत के उस संक्रमणकाल का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ युद्ध, मृत्यु, शोक और विनाश के बीच जीवन, आशा और भविष्य की पुनर्स्थापना का संघर्ष दिखाई देता है। यदि कैकेयी रामायण में घटनाओं की दिशा बदलने वाली पात्र हैं, तो उत्तरा महाभारत में युद्धोपरांत जीवन की पुनर्स्थापना और सांस्कृतिक निरंतरता की प्रतीक हैं।

उत्तरा का महत्त्व केवल इस कारण नहीं है कि वे अभिमन्यु की पत्नी थीं, बल्कि इसलिए भी कि उनके गर्भ से जन्मे परीक्षित के माध्यम से कुरुवंश की परंपरा आगे बढ़ी। यदि परीक्षित का जन्म न होता, तो महाभारत का राजवंश वहीं समाप्त हो जाता। इसलिए उत्तरा भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में "वंश-परंपरा की संरक्षिका" के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

### 8.2 उत्तरा का जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि

उत्तरा मत्स्य देश के राजा विराट और रानी सुदेष्णा की पुत्री थीं। विराट राज्य महाभारत में एक समृद्ध, शक्तिशाली और सांस्कृतिक दृष्टि से विकसित राज्य के रूप में वर्णित है। पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास का अंतिम वर्ष इसी राज्य में व्यतीत किया था।

अर्जुन ने अज्ञातवास के दौरान "बृहन्नला" के रूप में उत्तरा को नृत्य और संगीत की शिक्षा दी। यह प्रसंग केवल कथानक का रोचक भाग नहीं, बल्कि उस समय राजपरिवार की कन्याओं को कला एवं संस्कृति की शिक्षा दिए जाने की परंपरा का भी परिचायक है। इससे स्पष्ट होता है कि उत्तरा का पालन-पोषण एक ऐसे वातावरण में हुआ जहाँ शिक्षा, कला और शिष्टाचार को महत्त्व दिया जाता था।

उत्तरा का व्यक्तित्व प्रारम्भ में सरल, विनम्र और संस्कारी राजकुमारी का है, किंतु महाभारत की घटनाएँ उन्हें अत्यंत कठिन जीवन-संघर्षों से परिचित कराती हैं। यही संघर्ष उनके चरित्र को गहराई प्रदान करता है।

### 8.3 अभिमन्यु से विवाह : राजनीतिक और सांस्कृतिक महत्त्व

अज्ञातवास समाप्त होने के बाद राजा विराट ने अपनी पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन से करने का प्रस्ताव रखा। अर्जुन ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहा कि उन्होंने उत्तरा को पुत्री के समान शिक्षा दी है, अतः वे उसे अपने पुत्र अभिमन्यु की पत्नी बनाना अधिक उचित समझते हैं।

यह निर्णय भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य संबंध की मर्यादा का उत्कृष्ट उदाहरण है। साथ ही यह विवाह पाण्डवों और मत्स्य राज्य के मध्य राजनीतिक गठबंधन को भी सुदृढ़ करता है। इस प्रकार उत्तरा केवल राजपरिवार की पुत्री नहीं रहतीं, बल्कि दो शक्तिशाली राजवंशों के बीच सांस्कृतिक और राजनीतिक सेतु बन जाती हैं।

अभिमन्यु और उत्तरा का दाम्पत्य जीवन अत्यंत अल्पकालिक रहा, परन्तु उसमें स्नेह, सम्मान और भविष्य की आशा निहित थी। दुर्भाग्यवश, कुरुक्षेत्र युद्ध ने इस सुखद जीवन को बहुत शीघ्र समाप्त कर दिया।

### 8.4 अभिमन्यु की मृत्यु और उत्तरा का जीवन-संघर्ष

महाभारत का सबसे मार्मिक प्रसंग अभिमन्यु की वीरगति है। चक्रव्यूह में अकेले प्रवेश कर उन्होंने असाधारण साहस का परिचय दिया, किन्तु अनेक महारथियों द्वारा नियम-विरुद्ध युद्ध किए जाने के कारण वे वीरगति को प्राप्त हुए।

उस समय उत्तरा गर्भवती थीं। विवाह के थोड़े ही समय बाद पति की मृत्यु ने उनके जीवन को गहरे शोक में डाल दिया। एक युवा स्त्री, जो भविष्य के सपने देख रही थी, अचानक विधवा हो जाती है। यह प्रसंग केवल व्यक्तिगत दुःख का चित्रण नहीं है, बल्कि युद्ध के सामाजिक परिणामों को भी उजागर करता है।

महाभारत में उत्तरा का विलाप अत्यंत मार्मिक है। उसमें केवल पति-वियोग का शोक नहीं, बल्कि भविष्य की अनिश्चितता, सामाजिक असुरक्षा और मातृत्व की चिंता भी अभिव्यक्त होती है। यह प्रसंग युद्ध के मानवीय मूल्य और उसकी त्रासदी को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।

### 8.5 मातृत्व और परीक्षित का जन्म

उत्तरा के चरित्र का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष उनका मातृत्व है। अभिमन्यु की मृत्यु के पश्चात वे अपने गर्भस्थ शिशु के माध्यम से भविष्य की आशा को संजोए रखती हैं।

युद्ध समाप्त होने के बाद अश्वत्थामा ने प्रतिशोधवश ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया, जिसका लक्ष्य उत्तरा का गर्भ था। महाभारत के अनुसार उत्तरा भयभीत होकर श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती हैं—

"हे माधव! मेरे गर्भ में पल रहे इस बालक की रक्षा कीजिए; यही कुरुवंश की अंतिम आशा है।"

श्रीकृष्ण अपनी दिव्य शक्ति से गर्भस्थ शिशु की रक्षा करते हैं। यही बालक आगे चलकर राजा परीक्षित बनता है।

यह प्रसंग भारतीय संस्कृति में मातृत्व की सर्वोच्च प्रतिष्ठा को दर्शाता है। उत्तरा का मातृत्व केवल एक पुत्र के जन्म तक सीमित नहीं है; वह एक पूरे राजवंश, उसकी परंपरा और सांस्कृतिक निरंतरता की रक्षा का माध्यम बनता है।

### 8.6 युद्धोत्तर पुनर्निर्माण में उत्तरा की भूमिका

महाभारत का युद्ध केवल राजाओं का संघर्ष नहीं था; उसने सम्पूर्ण समाज को प्रभावित किया। युद्ध के बाद अधिकांश परिवार उजड़ चुके थे और कुरुवंश लगभग समाप्त हो चुका था। ऐसे समय में उत्तरा आशा और पुनर्निर्माण का प्रतीक बनकर सामने आती हैं।

परीक्षित के पालन-पोषण और राजवंश की निरंतरता में उनका योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वे शोक से टूटने के बजाय अपने पुत्र के माध्यम से भविष्य का निर्माण करती हैं। यही कारण है कि उन्हें युद्धोत्तर समाज की पुनर्संरचना का आधार माना जा सकता है।

उत्तरा का जीवन यह संदेश देता है कि युद्ध के बाद भी जीवन समाप्त नहीं होता; धैर्य, कर्तव्य और मातृत्व के माध्यम से समाज का पुनर्निर्माण संभव है।

### 8.7 उत्तरा का सांस्कृतिक एवं नैतिक महत्त्व

भारतीय संस्कृति में उत्तरा कई मूल्यों की प्रतिनिधि हैं—

(क) धैर्य

विपरीत परिस्थितियों में भी वे धैर्य नहीं खोतीं। पति की मृत्यु और युद्ध की विभीषिका के बाद भी वे जीवन के प्रति आशावादी रहती हैं।

(ख) मातृत्व

उनका मातृत्व केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और ऐतिहासिक है। उनके माध्यम से कुरुवंश की परंपरा आगे बढ़ती है।

(ग) कर्तव्यबोध

उत्तरा अपने व्यक्तिगत दुःख से ऊपर उठकर भविष्य के प्रति उत्तरदायित्व निभाती हैं। यह भारतीय संस्कृति में नारी के कर्तव्यबोध का उत्कृष्ट उदाहरण है।

(घ) आशा का प्रतीक

महाभारत का समापन पूर्ण विनाश पर नहीं, बल्कि परीक्षित के जन्म के माध्यम से नई शुरुआत पर होता है। इस नई शुरुआत का केंद्र उत्तरा हैं।

### 8.8 मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

उत्तरा का चरित्र मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील है। उनके व्यक्तित्व में निम्न प्रमुख मनोवैज्ञानिक अवस्थाएँ दिखाई देती हैं—

- प्रेम और दाम्पत्य जीवन की आशा
- युद्ध के कारण उत्पन्न आघात
- विधवापन की पीड़ा
- मातृत्व की जिम्मेदारी
- भविष्य के प्रति आशावाद

इन सभी अवस्थाओं के बीच वे मानसिक संतुलन बनाए रखती हैं। आधुनिक मनोविज्ञान की दृष्टि से इसे Resilience (लचीलापन या विपरीत परिस्थितियों से उबरने की क्षमता) कहा जाता है। उत्तरा इसी मानसिक शक्ति का उदाहरण हैं।

### 8.9 आधुनिक नारीवादी दृष्टिकोण

आधुनिक नारीवादी आलोचना के अनुसार उत्तरा का चरित्र केवल मौन और पीड़ा का प्रतीक नहीं है। वे जीवन की निरंतरता, सांस्कृतिक उत्तराधिकार और मातृत्व की शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं।

नारीवादी विद्वानों का मत है कि महाभारत की स्त्रियाँ केवल युद्ध की पीड़ित नहीं हैं; वे युद्धोत्तर समाज के पुनर्निर्माण की भी प्रमुख आधारशिला हैं। इस दृष्टि से उत्तरा का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है।

उनकी भूमिका यह सिद्ध करती है कि इतिहास केवल युद्ध जीतने वालों द्वारा नहीं लिखा जाता, बल्कि उन स्त्रियों द्वारा भी निर्मित होता है जो विनाश के बाद नई पीढ़ी को जन्म देती हैं और समाज को पुनः संगठित करती हैं।

### 8.10 कैकेयी और उत्तरा : प्रारंभिक तुलनात्मक संकेत

यद्यपि विस्तृत तुलना अगले भाग में प्रस्तुत की जाएगी, फिर भी यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदु उल्लेखनीय हैं—

• कैकेयी राजनीतिक निर्णय लेकर इतिहास की दिशा बदलती हैं, जबकि उत्तरा इतिहास के विनाशकारी मोड़ के बाद उसे पुनः जीवित करती हैं।

• कैकेयी परिवर्तन की प्रेरक हैं; उत्तरा परिवर्तन के पश्चात स्थिरता की आधारशिला।

• कैकेयी के निर्णय से रामायण का संघर्ष आरम्भ होता है; उत्तरा के मातृत्व से महाभारत के बाद नई व्यवस्था का आरम्भ होता है।

• दोनों पात्रों में मातृत्व और उत्तरदायित्व की भावना समान है, परन्तु उनकी अभिव्यक्ति भिन्न है।

### 8.11 निष्कर्ष

उत्तरा का चरित्र महाभारत के सबसे महत्त्वपूर्ण, किंतु अपेक्षाकृत कम चर्चित स्त्री-पात्रों में से एक है। वे धैर्य, मातृत्व, आशा और सांस्कृतिक निरंतरता की प्रतीक हैं। उनका योगदान केवल अभिमन्यु की पत्नी होने तक सीमित नहीं है; वे युद्धोत्तर भारत के पुनर्निर्माण की आधारशिला हैं। परीक्षित के माध्यम से उन्होंने कुरुवंश की परंपरा को जीवित रखा और यह सिद्ध किया कि इतिहास की निरंतरता केवल वीरता से नहीं, बल्कि धैर्य, मातृत्व और जीवन-संरक्षण से भी बनी रहती है।

## 9. कैकेयी एवं उत्तरा का तुलनात्मक अध्ययन

### 9.1 भूमिका

भारतीय महाकाव्य रामायण और महाभारत केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता, संस्कृति, राजनीति, दर्शन और सामाजिक मूल्यों के आधार-ग्रंथ हैं। इन महाकाव्यों में वर्णित स्त्री-पात्र केवल पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक परिवर्तन, नैतिक निर्णय और इतिहास-निर्माण की सक्रिय भागीदार हैं।

रामायण की कैकेयी और महाभारत की उत्तरा ऐसे ही दो महत्त्वपूर्ण स्त्री-पात्र हैं। यद्यपि दोनों अलग-अलग काल, परिस्थितियों और कथानकों से संबंधित हैं, फिर भी दोनों के जीवन में कुछ ऐसे समान तत्व हैं जो भारतीय नारी के विविध आयामों को उजागर करते हैं। कैकेयी जहाँ सत्ता, निर्णय और राजधर्म की प्रतिनिधि हैं, वहीं उत्तरा धैर्य, मातृत्व और सांस्कृतिक निरंतरता की प्रतीक हैं। इस अध्याय में दोनों पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन विभिन्न आधारों पर प्रस्तुत किया गया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 3, July 2026
Impact Factor: 8.2

### 9.2 व्यक्तित्व की तुलना

कैकेयी का व्यक्तित्व सक्रिय, साहसी, आत्मविश्वासी और राजनीतिक दृष्टि से परिपक्व है। वे निर्णय लेने में सक्षम हैं तथा अपने अधिकारों का प्रयोग करने में संकोच नहीं करतीं। उनके व्यक्तित्व में नेतृत्व और दृढ़ता स्पष्ट दिखाई देती है।

इसके विपरीत, उत्तरा का व्यक्तित्व शांत, विनम्र, सहनशील और धैर्यपूर्ण है। वे संघर्ष का समाधान आक्रामक निर्णयों से नहीं, बल्कि संयम और कर्तव्यबोध से करती हैं। उनका चरित्र भारतीय नारी के धैर्य, करुणा और आंतरिक शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

इस प्रकार दोनों पात्रों के व्यक्तित्व भिन्न होने के बावजूद समान रूप से प्रभावशाली हैं।

### 9.3 मातृत्व की अवधारणा

दोनों पात्रों में मातृत्व की भावना अत्यंत प्रबल है, किन्तु उसकी अभिव्यक्ति भिन्न है।

कैकेयी अपने पुत्र भरत के भविष्य और अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करती हैं। उनके निर्णय का मूल कारण मातृत्व और उत्तराधिकार की चिंता है। यद्यपि उनके निर्णय का परिणाम दुखद हुआ, परन्तु उसकी प्रेरणा एक माँ के रूप में अपने पुत्र के हित की रक्षा करना था।

उत्तरा का मातृत्व अधिक व्यापक और ऐतिहासिक है। वे केवल अपने पुत्र की माता नहीं, बल्कि सम्पूर्ण कुरुवंश की आशा का केंद्र हैं। परीक्षित के माध्यम से उन्होंने राजवंश की निरंतरता बनाए रखी।

इस प्रकार कैकेयी का मातृत्व संरक्षणात्मक (Protective Motherhood) है, जबकि उत्तरा का मातृत्व सृजनात्मक (Creative and Restorative Motherhood) है।

### 9.4 राजनीतिक चेतना

कैकेयी भारतीय महाकाव्यों की सबसे राजनीतिक रूप से जागरूक स्त्रियों में से एक हैं। वे उत्तराधिकार, राजधर्म और सत्ता-संतुलन को समझती हैं। उनके निर्णय में राजनीतिक दूरदर्शिता और सत्ता-चेतना स्पष्ट दिखाई देती है।

उत्तरा प्रत्यक्ष राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करतीं। उनका योगदान अप्रत्यक्ष रूप से राजवंश की निरंतरता के माध्यम से सामने आता है। इस दृष्टि से कैकेयी सक्रिय राजनीतिक व्यक्तित्व हैं, जबकि उत्तरा सांस्कृतिक-राजनीतिक स्थिरता की आधारशिला हैं।

### 9.5 धर्म और कर्तव्यबोध

भारतीय महाकाव्यों में धर्म केवल धार्मिक आस्था नहीं, बल्कि कर्तव्य, न्याय और सामाजिक उत्तरदायित्व का सिद्धांत है।

कैकेयी अपने दृष्टिकोण से राजधर्म और वचनपालन की रक्षा करती हैं। वे दशरथ को उनके पूर्व वचन की याद दिलाती हैं। उनका निर्णय नैतिक रूप से विवादास्पद अवश्य है, परन्तु वह तत्कालीन राजपरंपरा और उत्तराधिकार के संदर्भ में समझा जा सकता है।

उत्तरा का धर्म मातृत्व, धैर्य और जीवन-संरक्षण में निहित है। वे अपने व्यक्तिगत दुःख से ऊपर उठकर भविष्य के प्रति उत्तरदायित्व निभाती हैं।

### 9.6 मनोवैज्ञानिक तुलना

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से दोनों पात्र अत्यंत रोचक हैं।

कैकेयी के व्यक्तित्व में मातृत्व, असुरक्षा, महत्वाकांक्षा, राजनीतिक चेतना तथा भावनात्मक दबाव का समन्वय दिखाई देता है। मंथरा का प्रभाव उनके निर्णय को प्रभावित करता है।

उत्तरा के व्यक्तित्व में दुःख, धैर्य, आशा और मानसिक दृढ़ता का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है। पति की मृत्यु और युद्ध की विभीषिका के बाद भी वे मानसिक रूप से टूटती नहीं हैं।

आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार कैकेयी "निर्णयात्मक व्यक्तित्व" (Decisive Personality) का उदाहरण हैं, जबकि उत्तरा "Resilience" अर्थात विपरीत परिस्थितियों से उबरने की क्षमता का आदर्श प्रस्तुत करती हैं।

### 9.7 सांस्कृतिक योगदान

कैकेयी का निर्णय रामायण की संपूर्ण कथा का आधार बनता है। राम का वनवास, रावण-वध और रामराज्य की स्थापना उसी निर्णय से संभव होती है। इस प्रकार वे अप्रत्यक्ष रूप से धर्मस्थापना की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

उत्तरा का योगदान महाभारत के युद्धोत्तर काल में दिखाई देता है। परीक्षित के जन्म के माध्यम से उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक और राजवंशीय परंपरा को जीवित रखा। यदि परीक्षित का जन्म न होता, तो कुरुवंश की परंपरा समाप्त हो जाती।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 3, July 2026
Impact Factor: 8.2

### 9.8 आधुनिक नारीवादी दृष्टिकोण

समकालीन नारीवादी आलोचना दोनों पात्रों का पुनर्मूल्यांकन करती है।

कैकेयी को लंबे समय तक केवल "दोषी रानी" के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि आधुनिक आलोचक उन्हें एक ऐसी स्त्री मानते हैं जो सत्ता, अधिकार और निर्णय लेने की क्षमता रखती है। उनका चरित्र यह सिद्ध करता है कि प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियाँ राजनीतिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भूमिका निभा सकती थीं।

उत्तरा को भी केवल शोकग्रस्त विधवा के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। वे जीवन की पुनर्स्थापना, मातृत्व और सांस्कृतिक उत्तराधिकार की प्रतीक हैं। वे युद्ध के बाद समाज के पुनर्निर्माण की प्रतिनिधि हैं।

### 9.9 तुलनात्मक सारणी

आधार कैकेयी उत्तरा

महाकाव्य रामायण महाभारत

पारिवारिक स्थिति दशरथ की रानी अभिमन्यु की पत्नी

प्रमुख पहचान भरत की माता परीक्षित की माता

व्यक्तित्व साहसी, निर्णायक, राजनीतिक धैर्यवान, सहनशील, करुणामयी

भूमिका कथा की दिशा बदलना वंश की निरंतरता बनाए रखना

मातृत्व पुत्र के अधिकारों की रक्षा भविष्य की पीढ़ी का संरक्षण

राजनीतिक चेतना प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष

सांस्कृतिक योगदान रामकथा का आरंभ कुरुवंश का संरक्षण

आधुनिक दृष्टि पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता पुनर्स्थापनात्मक नारी का आदर्श

### 9.10 शोध के प्रमुख निष्कर्ष

इस अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं—

1. कैकेयी और उत्तरा दोनों भारतीय महाकाव्यों की अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्त्री-पात्र हैं।
2. कैकेयी का चरित्र केवल नकारात्मक नहीं, बल्कि बहुआयामी और राजनीतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।
3. उत्तरा युद्धोत्तर पुनर्निर्माण तथा सांस्कृतिक निरंतरता की प्रतीक हैं।
4. दोनों पात्रों में मातृत्व सर्वोच्च मूल्य के रूप में विद्यमान है।

5. दोनों ने अपने-अपने महाकाव्यों की कथा और भारतीय सांस्कृतिक इतिहास को निर्णायक रूप से प्रभावित किया।

6. आधुनिक नारीवादी दृष्टिकोण दोनों पात्रों के पुनर्पाठ की आवश्यकता पर बल देता है।

## 10. निष्कर्ष

रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति के दो ऐसे महाकाव्य हैं जिनमें नारी केवल पुरुष पात्रों की सहायक नहीं, बल्कि इतिहास-निर्माण की सक्रिय शक्ति है। प्रस्तुत शोध से स्पष्ट होता है कि कैकेयी और उत्तरा दोनों अपने-अपने संदर्भ में भारतीय नारी के विभिन्न आयामों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

कैकेयी साहस, निर्णय क्षमता, मातृत्व और राजनीतिक चेतना की प्रतीक हैं। उनके निर्णय ने रामायण की कथा को गति प्रदान की और धर्मस्थापना की प्रक्रिया का मार्ग प्रशस्त किया। दूसरी ओर, उत्तरा धैर्य, त्याग, मातृत्व और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की प्रतीक हैं। उनके माध्यम से कुरुवंश की परंपरा सुरक्षित रही और युद्ध के बाद समाज को नई आशा मिली।

आधुनिक समाज में इन दोनों पात्रों का पुनर्पाठ इसलिए आवश्यक है क्योंकि वे भारतीय नारी के उस स्वरूप को प्रस्तुत करती हैं जो केवल त्याग और करुणा तक सीमित नहीं, बल्कि नेतृत्व, उत्तरदायित्व, निर्णय क्षमता और सांस्कृतिक संरक्षण का भी प्रतीक है। अतः कैकेयी और उत्तरा दोनों भारतीय साहित्य की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर हैं, जिनका अध्ययन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

## संदर्भ सूची

### प्राथमिक स्रोत

1. वाल्मीकि. श्रीमद् वाल्मीकि रामायण. गीता प्रेस, गोरखपुर।

2. तुलसीदास. श्रीरामचरितमानस. गीता प्रेस, गोरखपुर।

3. व्यास. महाभारत. गीता प्रेस, गोरखपुर।

4. श्रीमद्भागवत महापुराण. गीता प्रेस, गोरखपुर।

5. अध्यात्म रामायण. गीता प्रेस, गोरखपुर।

6. आनंद रामायण. गीता प्रेस, गोरखपुर।

**द्वितीयक स्रोत**

7. कर्वे, इरावती. युगांत. राजकमल प्रकाशन।

8. द्विवेदी, हज़ारी प्रसाद. भारतीय संस्कृति के स्वरूप. राजकमल प्रकाशन।

9. शर्मा, रामविलास. भारतीय साहित्य और संस्कृति. वाणी प्रकाशन।

10. सिंह, नामवर. इतिहास और आलोचना. राजकमल प्रकाशन।

11. त्रिपाठी, विश्वनाथ. हिंदी आलोचना की परंपरा. राजकमल प्रकाशन।

12. रामानुजन, ए. के. Three Hundred Ramayanas. Oxford University Press.

13. Doniger, Wendy. The Hindus: An Alternative History. Penguin Books.

14. Richman, Paula. Many Ramayanas. University of California Press.

15. Thapar, Romila. Cultural Pasts. Oxford University Press.

16. Goldman, Robert P. The Ramayana of Valmiki. Princeton University Press.

17. Hiltebeitel, Alf. Rethinking the Mahabharata. University of Chicago Press.

18. Brockington, J. L. The Sanskrit Epics. Brill.

19. Basham, A. L. The Wonder That Was India. Rupa Publications.

20. Kane, P. V. History of Dharmasastra. Bhandarkar Oriental Research Institute